अनीता बसेरा
सहायक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
जीवनगढ़, विकासनगर, देहरादून

सामर्थ्य केवल इच्छा का दूसरा नाम है...

प्रधानाध्यापिका – सरस्वती उनियाल
सी.आर.सी.सी – मनोज राठौर
भोजन माता – संजो देवी, मितलेश, शान्ति देवी
नामांकन – 102

अगर आप देहरादून (विकासनगर) राजकीय प्राथमिक विद्यालय जीवनगढ़ जायें और अचानक से कक्षा में शेर के दहाड़ने की आवाजें सुनाई देने लगें तो घबराइयेगा नहीं, समझ जाइयेगा कि अनीता बसेरा अपने बच्चों को नाट्य कला द्वारा कहानी करा रही होंगी। अनीता जी नाट्य कला द्वारा कहानी पढ़ाते हुए बच्चों को कहानी के साथ पूरी तरह जोड़ पाती हैं और इस वजह से वे अपने स्कूल के बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। इनकी कक्षा में सीखने सिखाने के प्रयोग हर दिन कुछ अलग ही होते हैं। ऐसी ही बच्चों की लोकप्रिय और पढ़ाने के तरीकों में कुछ नया करने को उत्सुक रहने वाली अनीता बसेरा विकासनगर ब्लॉक के जीवनगढ़ स्कूल की अध्यापिका हैं।

श्री मिलाप सिंह बसेरा और श्रीमती सरस्वती बसेरा की पांच संतानों में तीसरे नंबर पर जन्मीं अनीता बसेरा का जीवन शुरू से ही काफी संघर्षपूर्ण रहा। जब अनीता 12वीं कक्षा में थीं, तभी इन्हें आर्थराइटिस हो गया। दर्द ने जो उनका दामन पकड़ा तो कभी छोड़ा ही नहीं। लेकिन उन्होंने उस दर्द को अपनी हार की वजह नहीं बनने दिया। उन्होंने मन में दृढ़ संकल्प किया कि वो पढ़ाई को बीच में हरगिज नहीं छोड़ेंगी और खुद को आर्थिक रूप से

मजबूत करेंगी। शारीरिक तकलीफ और मन में कुछ करने के निर्णय के बीच उन्होंने शिक्षक बनने की सोची और उसकी तैयारी की।

सरकारी विभाग में अध्यापक के तौर पर इनकी शुरुआत जनवरी 2006 से हुयी। पहली नियुक्ति राजकीय प्राथमिक विद्यालय कोरुवा ब्लॉक कालसी, देहरादून में हुई। वैसे तो कोरुवा जौनसार क्षेत्र में बहुत विकसित गांव है लेकिन फिर भी किसी कारणवश नवनिर्मित भवन विद्यालय को अभी तक मिला नहीं था। विद्यालय जंगलात द्वारा प्राप्त एक कमरे में चल रहा था। सरकारी स्कूल में बतौर आने से पहले वो प्राइवेट स्कूल में थी तो यहां आकर उन्हें व्यवस्थागत और शिक्षण प्रक्रिया में काफी अंतर नज़र आया। इस अंतर के चलते अनीता जी को काफी अटपटा सा भी लगता लेकिन धीरे–धीरे वे उस माहौल में ढलने लगीं। लेकिन मन में कुछ बैचैनी तो रहती ही थी कि काश ऐसा होता काश वैसा होता। नियुक्ति के 8 माह बाद इनके पास जब स्कूल का चार्ज आया, तब अनीता जी बहुत खुश हुयीं क्योंकि अब वो अपनी इच्छा और समझ के अनुसार स्कूल के माहौल में बदलाव कर सकती थीं।

उन्होंने सबसे पहले स्कूल का रंग–रोगन कराया। खुद भी छुट्टी के बाद कक्षा–कक्ष में अपनी योग्यतानुसार पेंटिंग की। अनीता जी का विश्वास था कि अगर बच्चे पूरे दिन में कई बार इन दीवारों को देखेंगे तो इन चित्रों का उनके मन पर कुछ न कुछ असर जरूर होगा क्योंकि सरकारी स्कूलों में जो बच्चे आते हैं उन्हें अभिभावकों का बहुत कम सहयोग मिल पाता है। इसका कारण यह है कि उनके माता पिता आजीविका के संघर्ष से ही जूझते रहते हैं। इसके पश्चात "चाइल्ड फ्रेंडली कोश" के अंतर्गत एस.एम.सी. के परामर्श

के अनुसार विद्यालय में झूले लगवाए। भोजन माताओं, अनुदेशिका और बच्चों की मदद से विद्यालय प्रांगण में फूल लगवाए। कुछ ही समय में इस विद्यालय में नए हेडमास्टर साहब भी आ गए। इन नये हेडमास्टर ने भी अनीता जी के प्रयासों को समझा और उनके सभी कार्यों में सहयोग किया जिसके चलते विद्यालय की व्यवस्थागत स्थिति तो सुधर गयी।

अब अनीता जी का उद्देश्य था कि किस तरह जल्दी से जल्दी बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार किया जा सके। उन्होंने अपने नये हेडमास्टर के साथ विचार विमर्श करके विद्यालय की छुट्टी के बाद कमजोर छात्रों को अपने कक्ष में पढ़ाना शुरू किया। उनकी इस पहल का परिणाम यह हुआ कि अब तक जिन बच्चों को कमजोर छात्र समझा जा रहा था, उनका भी सीखने का स्तर बढ़ा और उनके नंबर भी अच्छे आने लगे। अब तक विद्यालय की ग्रेडिंग "सी" आ रही थी लेकिन बच्चों को अतिरिक्त समय देने की योजना के बाद अब "बी" में पहुंच गयी। उन्होंने एस.एम.सी. के साथ मिलकर बैठक में लड़कियों के लिए स्कर्ट–शर्ट और लड़कों के लिए पैंट–शर्ट, टाई, बेल्ट बनवाई। अभिभावकों ने इस पहल की काफी प्रशंसा करते हुए बताया कि, "अपने विद्यालय के बच्चों को जब हमने पहली बार इस वेशभूषा में देखा तो हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा"।

इसके बाद बाल मेले (सपनों की उड़ान) में मनीषा और विनीता नाम की दो छात्राएं कविता पाठ और भाषण में राज्य स्तर पर तीसरे और दूसरे स्थान पर रही। इसी विद्यालय के परिसर में कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय भी था, अनीता जी ने पाया कि इस विद्यालय की छात्राएं अंग्रेजी विषय में काफी पिछड़ रही थी इसलिए उन्होंने विद्यालय की छुट्टी के बाद आवासीय

विद्यालय की छात्राओं को अंग्रेजी पढ़ाना शुरू किया साथ ही वो इन बच्चों को रोज सुबह 1 घंटा योग कराती थी।

कोरूवा में रहते हुए जौनसारी संस्कृति को भी अनीता जी बहुत अच्छे से समझने लगी थी। स्थानीय मेलों, त्योहारों और शादी ब्याह में बहुत प्रतिभाग करने के कारण उन्हें इस संस्कृति की अच्छी समझ हो गयी और उदयपुर में 15 दिवसीय कठपुतली कला के प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने जौनसारी परिवेश पर एक प्रस्तुति दी।

अनीता जी 2012 तक कोरूवा में ही रही लेकिन फरवरी 2013 में असहनीय शारीरिक पीड़ा के कारण इन्हें व्यवस्था में "राजकीय प्राथमिक विद्यालय जंगलात" में शिक्षण कार्य के लिए भेजा गया। वो बताती हैं कि वह समय उनके जीवन का बहुत ही संघर्षपूर्ण समय था। व्यवस्था के समय कई बार असहायता का सा अनुभव भी होता था।

इसी दौरान अनीता जी के जीवन में फिर एक नया मोड़ आया। इनका स्थानांतरण विकासनगर ब्लॉक के राजकीय प्राथमिक विद्यालय जीवनगढ़ में हुआ। इस समय एक बार फिर इनके स्वास्थ्य ने इन्हें परेशान करना शुरू किया। दर्द था कि लगातार बढ़ता ही जा रहा था। एक तरफ शरीर का दर्द और दूसरी तरफ नया स्कूल, नये बच्चे और कुछ नया करने की इच्छा।

आखिर उनकी इच्छाशक्ति के आगे दर्द को हारना पड़ा। वो बताती हैं कि "इस नए स्कूल का अनुभव बहुत अलग था। अलग–अलग परिवेश से आने वाले बच्चे, इन्हें समझने और समझाने में थोड़ा वक़्त लग गया।" अनीता जी ने यहां कई नये प्रयोग किये जैसे बच्चों को अंग्रेजी के कुछ शब्द देकर उन्हें दैनिक प्रयोग में लाने के लिए प्रेरित किया। अंग्रेजी का एक ध्वनि चार्ट बनाया और उसकी सहायता से बच्चों को अंग्रेजी पढना सिखाया। अनीता जी ने कक्षा 5 के बच्चों को डिक्शनरी देखने की आदत डलवायी। शुरू–शुरू में बच्चे इस चार्ट के सहारे पढ़ना सीखते हैं लेकिन धीरे–धीरे वे खुद से अंग्रेजी पढना सीख लेते हैं। आज कक्षा 5 के लगभग सभी छात्र बिना चार्ट की सहायता से अंग्रेजी पढ़ने और समझने की कोशिश करने लगे हैं। कठिनाई महसूस होने पर शिक्षिका ध्वनि चार्ट के माध्यम से उनकी पढने

में सहायता करती हैं। कक्षा में अंग्रेजी और हिंदी शब्दों की अन्ताक्षरी करायी जाती है इससे बच्चों के शब्दकोष में वृद्धि होती है। खेलों के द्वारा गणित पढ़ाई जाती है।

अनीता जी ने अपनी इच्छाशक्ति के चलते न सिर्फ अपने शारीरिक कष्ट पर विजय पाई बल्कि उससे लड़ते हुए अपने स्कूल के बच्चों के साथ कुछ बेहतर करने के प्रयासों को भी सफल किया।

(अनीता बसेरा से हुई वर्तुल ढौंड़ियाल की बातचीत पर आधारित)